ज़िंदगी का समय चलेंगा । हम भी उसके साथ चलें ।

छेह वर्षों के बाद अर्जुन ने अलमारी खुला । पहली चीज़ जिसने उसके आँखों में मारा, उसका पुराना फुटबॉल था । फुटबॉल से उसको सदियों का रिश्ता थी ।

अर्जुन एक फुटबॉल खिलाड़ी हूँ । पाँच वर्षों से उसे फुटबॉल खेल रहा हूँ । आठ साल के उम्र में वह फुटबॉल खेलना शुरु कर दिया । उसी समय से वह उसके फुटबॉल टीम से बहुत अच्छी खिलाड़ी हैं । टीम के लिए बहुत सारा गोल दागा है । दुनिया में फुटबॉल से पहले उसको कोई नहीं है । उसे सारा फुटबॉल गेयीम में खेला है । दुनिया में सबी उसको आराधन करती थी । यह सब उसका मन में गया ।

अब वह फुटबॉल नहीं खेलूँगा । यही बात उसके मन को दुख दी । समय चलता रहा था । दीवार पर डाँगा वस्तू का नहीं अपनी जीवनचक्र का समय । वह समय चला रहा । रोकने को कोई नहीं सका । नहीं सकता ।

एक दिन फुटबॉल खेलते समय उसको एक दुरघटना हुई । उसके पैर को नहीं चला सकता । छेह साल से वह आशपनात्र में था । डॉ ने कहा की फुटबॉल नहीं खेल सकेगा । यही उसका मन की दुखी थी ।

अर्जुन बहुत समय इस बात पर सोया। जीवनचक्र चलते रहा। कोई को रुक नहीं सका। उसको जीवन में प्रातमिक ~~क्रित्या~~ कर्त्तव्य शुरु करने केलिए ही तकलीफ महसूस थी। उसको चलने, आने सबी को दूसरों का मदद चाहता था। माँ उसने किसि तरह से आश्वास किया। अर्जुन ने रोते से माँ से हमेशा ही तरह कहा "मेरा सपना खो गया। मैं क्या करु माँ? मेरा जिंदगी में फुटबॉल से कोई नहीं था। फुटबॉल से ही मैं यहा तक पहूँची।" माँ भी बहुत दुखी थी। अपनी बेटा की हालत देखकर उसे भी कब होये थी। फिर भी उसे कहा "बेटा, यह दुनिया की सबी बातें हमारा हाथ में नहीं हैं। वह सबी भगवान के हाथ में हूँ। हम सब तुमको प्रार्थना करता है। तुम धैर्य संभाले। कबी अवस्ते में भी आगे बढ़ू। क्योंकि जीवन चक्र को हमें रोक न सका। हमे दौड़ना चाहिए। समझ गई?" माँ की बातें शायद अर्जुन को शक्ति दिया होगा।

कल सुबह आई, लेकिन उसने सोया नहीं। उसके मूँह में खुशी भर दी। यह खुशी की बारे माँ उससे पूछा। उसका जवाब यह था "जीवन का समय जाऊँगा। लेकिन हमें आगे दौड़ना है। मैं मेरा सपना पूर्ण करूँगा।" इसकी बाद उसे अपनी कुछ दोस्तों को बुलाई। दोस्तों के मदद से वह

चलने लगा। डॉ के मदद से अपनी प्रातमिक कर्तव्य करने लगी। आठ साल के मेहनत के बाद अपनी इच्छा से, दूसरों के मदद से नहीं, सबंध चलने लगा। उसका खुशी इतनी थी की उसे घर सब दौड़ने लगे। जीवन का समय चलने लगी और अर्जुन आगे बढ़ती थी। कुछ महीनों के बाद फुटबॉल खेलने भी उसको सका। टीम केलिए पहली की तरह खेलने लगे। बहुत शाश गोल दागे। दुनिया की सबसी बड़ी खिलाड़ी बनी। एक फुटबॉल महान ने जन्म हुई। दर्शकों ने अर्जुन की मेहनत को देर तक तारिफ की। आज भी किसी ने उसको अपनी मेहनत के बारे में पूछो तो उसे खुशी से अपनी माँ के बात कहूँगा। "समय जाऊँगा। समय को हम रोक न सकता। हम एक दिन बच्चे थे, दूसरा दिन हमारा जीवन - सपना बन जाऊँगा। यही जीवन चक्र है, जीवन का समय का है। यही तो हमें रोक न सकता। फिर भी दुखी से न रहो। जीवित की मुसीबतें और खुशी उसकी समय पर आऊँगा। हमें हमारा समय पर चलो। हमारा सपने की पँखें फैलाते हुआ एक पक्षी के समान ऊँचे आसमान में चलो।"

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)